॥ आयुर्वेद में नेत्र शारीर एक अध्ययन ॥

□ डा० शैलेश कुमार पाठक
एम० डी० स्कालर
राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, लखनऊ

□ डा० श्रीमती शोभा मोबार
एम० डी०, पी-एच० डी०, डिमांस्ट्रेटर, शारीर विभाग
राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, लखनऊ

□ डा० यज्ञदत्त शुक्ल
बी० ए० एम० एम० एस०, पी-एच० डी०
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर शारीर विभाग
राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, लखनऊ

□ डा० प्रमोद कुमार
बी० आई० एम० एस०, डी० ए० वाई० एम०
प्रो० एवं विभागाध्यक्ष, शल्यशालाक्य विभाग
राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, लखनऊ

Self attested
SK Pathak

परिचय—आयुर्वेद में नेत्र शारीर का विशद वर्णन मिलता है। आचार्य सुश्रुत और वाग्भट्ट के अतिरिक्त भाव मिश्र ने भी अपने-अपने दृष्टिकोण से नेत्र शारीर का विशद वर्णन किया है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन आचार्यों को भी नेत्र शारीर का विशद ज्ञान था, क्योंकि उन्होंने नेत्र शारीर के साथ-साथ नेत्र में होने वाले सूक्ष्म से सूक्ष्म रोगों का वर्णन किया है, जो आधुनिक दृष्टिकोण से काफी सामंजस्य रखते हैं। जैसे पित्त विदग्ध दृष्टि, अम्ला व्यूषित से सभी आधुनिक दृष्टिकोण से विचार करने पर दृष्टिपटल की व्याधियों (Retinal Diseases) के अन्तर्गत आते हैं।

आयुर्वेद में नेत्र की गणना इन्द्रिय के रूप में की गई है, जिसका अधिष्ठान नेत्र है और रूप को ग्रहण करने की क्रिया इसी इन्द्रिय के द्वारा होती है।

प्राचीन आचार्यों ने पित्त के जो पांच भेद बताये है, उन पांच भेदों में आलोचक पित्त का स्थान नेत्र में बताया गया है और इसका प्रमुख कार्य दर्शन क्रिया को ठीक-ठीक सम्पन्न कराना है। सुश्रुत के शब्दों में—

'यद् दृष्टया पित्त तध्यिन, आलोचकाग्नि दित संज्ञा'
स्परूप ग्रहणडाधिता।

अर्थात् आलोचक पित्त चक्षुन्द्रिय की इस क्रिया में सहायक होता है, वह विषयों को स्पष्ट करता है। आलोकित करता है, तब चक्षुन्द्रिय इस विषय को ग्रहण करने में समर्थ होता है।

आधुनिक दृष्टिकोण से यदि इस पर विचार किया जाय तो स्पष्ट हो जाता है कि दृष्टिपटल (Retina) में पुतली के ठीक सामने पित्तबिन्दु (Yellowspot) नामक स्थान होता है, यह बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है। नेत्र में दर्शन कार्य के समय प्रकाश की किरणें इसी स्थान पर कर्णिका (Cornea) और लेंस के (Lens) माध्यम से पहुंचती हैं और इसके बाद दृष्टि नाड़ी के द्वारा मस्तिष्क पहुंच कर वस्तु का ज्ञान कराती है।

आचार्य सुश्रुत ने नेत्र के महत्व को स्वीकार करते हुए शालाक्य तन्त्र में सर्वप्रथम नेत्र रोग का ही वर्णन किया है। चूंकि सभी इन्द्रियों में नेत्रेन्द्रिय प्रधान है, इसलिए सर्वप्रथम इसी का वर्णन किया है।

आचार्य वाग्भट्ट ने भी नेत्र के महत्व को स्वीकार करते हुए उसकी रक्षा के लिए सर्वप्रथम उपदेश दिए है —

'चक्षुरक्षायां सर्वकालं मनुष्यैर्यत्नः कर्तव्यो जीवितं पावदिच्छा'

'व्यर्थौलोकाड्यं तुल्यरात्रिन्दिवान पुंसामन्धांना विध-मानेडपि विने'

(अ० हृ० उ०/३)

वास्तव में नेत्र शारीर का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसके अभाव में मनुष्य का जीवन बेकार है ।

नेत्र का निर्माण – आचार्य सुश्रुत ने शारीर स्थान अध्याय-३ में गर्भज भावों का वर्णन किया है, इसके अनुसार नेत्र का निर्माण 'आत्मज-भाव' से बताया गया है ।

(सु० शा० अ०-३)

नेत्र की उत्पत्ति—इसकी उत्पत्ति तैजस धातु से बतायी गई है अर्थात् इसमें अन्य धातुओं की अपेक्षा तैजस धातुयें अधिक होती हैं । जब तेजोधातु दृष्टि भाग में नहीं पहुंचता तो गर्भ जन्म से अन्धा हो जाता है, जब वह गर्भ धातु, रक्त से मिलता है, तो आंखें लाल हो जाती हैं, पित्त से सम्बन्धित होने पर पीला कफ, से युक्त हो जाने पर श्वेत आंख वाला तथा वात से होने पर तिरछे आंख वाला गर्भ पैदा होता है ।

(सु० शा० अ०-२)

नेत्र शारीर– आचार्य सुश्रुत ने नेत्र शारीर के वर्णन में सर्वप्रथम उसके प्रमाण को बताया है ।

'विद्याद् द्वयङ्गुल बाहुल्यं स्वांगुष्ठोदर सम्मितम् ।
द्वयङ्गुलं सर्वतः सार्धं भिषङ्नयन बुदबुदम् ॥
सुवृत्त गोस्तनाकारं सर्वभुत गुणोदभवम् ॥

(सु० उ० अ०-१)

अर्थात् नेत्र या नयन का अन्तः प्रवेश (Anterior-Posterior Piameter) बाहुल्य से दो अंगुली प्रमाण है । आंख को नयन बुदबुद कहने से अक्षिगोलक समझा जाता है । इसकी लम्बाई व्यक्ति विशेष की अंगुली से २१/२ है उंगुली और चौड़ाई २१/२ उंगुली होती है ।

इसके बाद आचार्य ने इसके रचनात्मक पहलू पर विचार करते हुए कहा है कि नेत्र देखने में अच्छा गोल पदार्थ है और गाय के स्तन के आकार का होता है । यह सर्वभूत तथा उसके गुणों से उत्पन्न है । इससे नेत्र की पंचभौतिकता प्रमाणित होती है—

आयुर्वेद के सभी आचार्यों ने शरीर को पंचभौतिक माना है । नेत्र भी शरीर का एक महत्वपूर्ण अंग है ।इसके प्रमाण स्वरूप आचार्य सुश्रुत ने कहा है, कि—

'पलंभूवोग्नितो रक्तवातात् कृष्णंसित जलात्'
आकाशाद् अश्रुमार्गश्च जायन्ते नेत्र बुदबुदे ।'

(सु०उ०अ०-१)

पृथ्वी तत्व से-नेत्र का मांस भाग (इससे Choroid का बोध होता है)

अग्नि तत्व से-रक्त भाग (इससे Blood vessels का बोध होता है)

वात तत्व से-कृष्ण भाग (Cornea)

जल तत्व से-शुक्ल भाग (Sclera and bulbes Conjuntiva)

आकाश तत्व से-अश्रुस्रोत समूह (Lacrimal duet and channels)

पृथ्वी –चूंकि पृथ्वी एक ठोस वस्तु है यह रूक्ष खर कठिन तथा गुरु गुण युक्त होती है, नेत्र का ठोस भाग जिन्हें मांस भाग कहा जाता है, वे भी ठोस तथा गुरु गुण युक्त होता है । आधुनिक दृष्टिकोण से यदि हम विचार करें तो यह भाग (Choroid) ही हो सकता है ।

अग्नि– अग्नि उष्ण होता है । यह पित्त गुण युक्त होने से स्वयं रक्त वर्ण का होता है । पित्त में अग्नि भाव है । इसलिए अग्नि तत्व से रक्त भाग को बताया गया है, इसमें नेत्र के (Blood vessels) का बोध होता है ।

वात --वायु संज्ञा वेदना तथा चेष्टा वह नाड़ी का द्योतक है, नेत्र के कृष्ण भाग (Cornea) और (Iris) भी नर्व से ही संचालित होता है, इसलिए कर्णिका (Cornea) के साधारण आघात (Slight injury) से भी नेत्र में भयंकर पीड़ा होती है । इसलिए वात तत्व से कृष्ण भाग की उत्पत्ति बतायी गई है, इसके कर्निया (Cornea) और तारामण्डल (Iris) का बोध होता है ।

जल – जल तत्व से श्वेत भाग की उत्पत्ति बतायी गई है, चूंकि जल का रूप स्वच्छ होता है ।अतः रूप के आधार पर भी श्वेत भाग से तुलना की जा सकती है । श्वेत भाग से वस्तुतः कन्जक्टाइवा अथवा स्कलेरा (Conjuntiva or Sclera) का बोध होता है । इसमें अश्रुस्राव (Lacrimal Secration) ज्यादा होता है । इसलिए इसे श्वेत भाग से उत्पत्ति बताई गई है ।

आकाश—आकाश तत्व से अश्रुमार्ग की उत्पत्ति बताई गई। आकाश महाभूत का गुण छिद्रयुक्त है। अश्रु स्रोत में अनेक छिद्र हैं। इसलिए आकाश तत्व से अश्रुमार्ग की उत्पत्ति बताई गई। इन वर्णनों के अतिरिक्त आचार्य सुश्रुत चिकित्सकीय दृष्टिकोण से नेत्र के भागों का जो वर्णन किया है, वह बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है—

'मण्डलानीश्च सन्धिश्च पटलानी च लोचने।
यथा क्रमं विजानीयात् पचषड चैव षड्‌ व च।

(सु०उ०आ०-१-३)

अर्थात् नेत्र में मण्डल पांच, संधि ६, ये क्रम से होते हैं।

नेत्र के मण्डल—मण्डल से तात्पर्य परिधि से है। इसे सरकिल ऐरिया भी कह सकते हैं जो इस प्रकार है—

१. पक्ष्म मण्डल (Cilia Circular Area)
२. वर्त्म मण्डल (Lid Circular Area)
३. श्वेत मण्डल (Sclerotic Area)
४. कृष्ण मण्डल (Corneal Circular Area)
५. दृष्टि मण्डल (Pupillary Circular Area)

पक्ष्म मण्डल (Eye lashes)

ऊपर और नीचे दोनों पलकों के रोम मिलाकर एक मण्डल सा बना लेते हैं। इसे पक्ष्म मण्डल कहते हैं।

वर्त्म मण्डल (Eye lid circular Area)

दोनों पलकों के बन्द हो जाने से एक मण्डल सा बन जाता है जिसे वर्त्म मण्डल कहते हैं। ये दोनों मण्डल वस्तुतः नेत्र रचना के सहायक अंग हैं। इन दोनों पलकों (वर्त्मों) के मूल में पक्ष्म रहती है। इसके ठीक नीचे दूसरी रेखा में अत्यन्त सूक्ष्म छिद्र दिखाई पड़ती है जिनमें सफेद घनस्राव निकलता है। यह स्राव (Meibomian Gland का स्राव है) रोमों के पक्ष्मों के मूल में भी कुछ ग्रन्थियां होती हैं, जिनसे निकला हुआ स्राव पक्ष्मों का पोषण करता है।

श्वेत मण्डल—नेत्र के वर्त्मों को हटाकर देखने में एक श्वेत गोलाकार भाग दिखाई देता है। इसे श्वेत मण्डल कहते हैं। आधुनिक दृष्टि से कंजन्टाइभा अथवा स्क्लेरोटिक एरिया कहा जा सकता है।

कृष्ण मण्डल—नेत्र को बाहर से देखने पर एक काले रंग का गोलाकार भाग दिखाई पड़ता है उसे कृष्ण मण्डल (Corneal circular Area) कहते हैं। यह बिलकुल पारदर्शक (Transparent) होता है, जिसमें मुख्यतः पांच स्तर पाये जाते हैं—

1. Epethelium Layer.
2. Bowmen's Membrane.
3. Substancia Prsopria.
4. Desimet's Membrane.
5. Endothelium Layer.

इस काले रंग के परदे में अपारदर्शकता आ जाने पर दृष्टि अवरुद्ध हो जाती है।

दृष्टि मंडल-तारा मण्डल (Iris) के मध्य में एक गोलाकार छिद्र होता है जिसे दृष्टिमण्डल व पुतली (Pupillary Circular Area) कहते हैं। उसके आकार में बढ़ना एवं घटना तारामण्डल के सेलों पर निर्भर करता है। यानि तारामण्डल की क्रिया से दृष्टि का संकोच एवं विस्तार हुआ करता है। जब इस पर प्रकाश पड़ता है तो वह संकुचित हो जाती है किन्तु जब हटा लिया है तो वह विस्तृत हो जाती है। दूर की वस्तु को देखने के लिए दृष्टि विस्तृत हो जाती है जिससे प्रकाश की किरणें दूरी से भी आ सके और नजदीक की वस्तु देखते समय इसमें संकोच हो जाती है। आचार्य सुश्रुत के अनुसार दृष्टिमण्डल--कृष्णमण्डल का १/७ होता है और दृष्टि का आकार मसूर दाल के समान होता है।

नेत्र की संधि (Junction of the eye)

१–पक्ष्म वर्त्म सन्धि (Licilia Junction)

जहां पक्ष्म और वर्त्म आपस में आकर एक दूसरे के साथ मिलते हैं उस स्थान विशेष को पक्ष्म वर्त्म सन्धि कहते हैं। इसी सन्धि स्थान पर कृमि ग्रन्थि नामक रोग उत्पन्न होता है।

२–वर्त्म शुक्ल सन्धिः (Fornix of the eye)

वर्त्म और शुक्क भाग जहां मिलते हैं, उसे वर्त्म शुक्क सन्धि कहते हैं।

अन्दर की ओर सम्पूर्ण पलक और नेत्र गोलक पर जो श्लेष्मावरण चढ़ा रहता है उसे नेत्र श्लेष्मावरण कहते हैं। यह आवरण ऊपरी पलक की धारा से लेकर सम्पूर्ण पलक और नेत्र गोलक और नीचे की पलक में फैला रहता है।

३–शुक्ल कृष्ण सन्धि (Solero Corneal Junction)

शुक्ल और कृष्ण भाग जहां आपस में आकर मिलते

हैं और स्थान विशेष को (शुक्ल कृष्ण सन्धि) कहते हैं।

४–कृष्ण दृष्टि सन्धि (Iris Pupillary Margin)

यह Cornea और Pupil का सन्धि स्थान है। इस स्थान को कृष्ण दृष्टि सन्धि कहते हैं।

५–कनीनिक सन्धि (Inner Canthus)

यह नासिका के समीप होती हैं और दोनों वर्त्मों के मिलने से बनती हैं।

अपांग संधि(Outer Canthus)

अपांग सन्धिः–बाहर की दोनों पलके जहां मिलती हैं उसी स्थान को(Outer Canthus) अपांग सन्धि कहते हैं।

नेत्र के पटल

पटल नेत्र का एक महत्वपूर्ण किन्तु विवादास्पद अवयव है। उन पटलों का अध्ययन करना चिकित्सकीय दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण है। क्योंकि इन पटलों में विकृति आ जाने पर वह महत्वपूर्ण है —

आचार्य सुश्रुत ने नेत्र के छह पटल बताये है—

द्वे वर्त्म पटले विद्याच्चत्वार्यन्यानि चाक्षिणि।
जायते तिमिरं येषु व्याधिः परम दारुणः॥
तेजोजलाश्रितं वाह्यं तेषवन्यत् पिशिताश्रितम्।
मेदस तृतीयं पटल माश्रितं त्ववस्थि चापरम।
पञ्च मास समं दृष्टेस्तेषां बहुल्य भिष्यते॥

—सु० उ० अ० १

इस प्रकार नेत्र में कुल छः पटल पाये जाते हैं–

१. वाह्य वर्त्म पटल
२. अभ्यान्तर वर्त्म पटल
३. तेजोजलाश्रित पटल | नेत्र गोलक में पाये
४. मांसाश्रित पटल | जाने वाले पटल
५. मेदस पटल
६. अस्थि पटल

इस प्रकार पटलों को दो वर्गों में विभाजित किया गया —

१. वर्त्म पटल
२. नेत्र गोलक में पाये जाने वाले पटल

वर्त्म पटल

१. वाह्य वर्त्म पटल—वाह्य वर्त्म पटल से तात्पर्य नेत्र के सम्पूर्ण वर्त्म भाग से है। इसे ही सुश्रुत ने वाह्य वर्त्म पटल की संज्ञा दी है।

अभ्यान्तर पटल—अभ्यान्तर वर्त्म पटल से तात्पर्य अभयान्तर वर्त्म के भाग से है। इन दोनों वर्त्म में विकृति आ जाने पर २१ प्रकार हो जाते है जिसे वर्त्म जन्य रोग कहते हैं।

१. नेत्र गोलक में पाये जाने वाले पटल

(अ) तेजोजलाश्रित पटल—आचार्य सुश्रुत ने नेत्र-गोलक में पाये जाने वाले प्रथम पटल को तेजोजलाश्रित पटल कहा है अर्थात् तेजोजल यानि Aquous humour जिस स्थान पर रहता है उसे तेजोजलाश्रित पटल कहते हैं। वैस्तुतः Aquous homour का स्थान Anterioor chamber है जिनके द्वारा Cornea का पोषण होता है एवं नेत्र के Intra occular pressure को बनाये रखने में सहायक होता है। वस्तुतः तेजो जलाश्रित पटल से Anterior chamber एवं Cornea का बोध होता है।

इस पटल का अध्ययन चिकित्सकीय दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण होता है। क्योंकि इसमें विकृति आ जाने पर रोगी को सभी वस्तुए अस्पष्ट रूप से दिखाई पड़ने लगती हैं।

(ब) द्वितीय पटल—आचार्य सुश्रुत के अनुसार नेत्र गोलन में पाये जाने वाले द्वितीय पटल को मांसाश्रित पटल कहते हैं।

आधुनिक दृष्टि से विचार करने पर यह भाग Choroid ही समझा जा सकता है। इसमें विकृति आ जाने पर दृष्टि अत्यन्त विभ्रान्त हो जाती है। रोगी को सभी वस्तुयें अविद्यमान रूप में दिखाई पड़ने लगती है। इस प्रकार के लक्षण Choroid में विकृति के कारण ही दिखाई पड़ते हैं।

(स) मेदस पटल—आचार्य सुश्रुत ने तृतीय पटल को मेदस पटल माना है जो बहुत ही व्यवहारिक उचित प्रतीत होता है।

शरीर में मेद की वृद्धि हो जाने पर शारीरिक अंग स्निग्ध हो जाते हैं।

नेत्र का Vitreous देखने में स्वच्छ एवं पारदर्शक प्रतीत होता है।

अतः तृतीय पटल को Vitreous से तुलना की जा सकती है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण अवयव है इसमें विकृति आ जाने पर नेत्र की दृष्टि में बाधा उत्पन्न हो जाती है। रोगी को दूर की वस्तुएं नजदीक और नजदीक की वस्तुएं

दूर दिखाई पड़ने लगती है।

(इ) अस्थि पटल—यह नेत्र की सबसे महत्वपूर्ण पटल है। सुश्रुत के अनुसार इस पटल में तिमिर नामक दारुण व्याधि उत्पन्न होती है जो कालान्तर में लिंगनाश को उत्पन्न करती है। चौथा एवं अन्तिम पटल होने में बहुत ही महत्वपूर्ण पटल है जिसमें विकृति आ जाने पर दृष्टि का नाश (Complete loss of vision) हो जाता है। अतः यह महत्वपूर्ण विषय है कि आधुनिक विचार से नेत्र का कौन सा भाग हो सकता है—

कुछ विद्वान इससे Retina, Macula Lutea का ग्रहण करते हैं कुछ Lens से इसकी तुलना बताते हैं क्योंकि दृष्टि का आकार सुश्रुत ने इस प्रकार बताया है। मसूर दाल मात्रांतु पंचभूत प्रसाद जाम। कुछ विद्वानों के अनुसार दृष्टि मसूर दाल यानि मसूरी पत्ते के समान होती है। ऐसा विचार दिया है। इससे Macula Lutea का बोध होता है क्योंकि इसी के मध्य में Fovea Centrelis (दर्शन केन्द्र) होता है। जहां मस्तिष्क से उत्पन्न दृष्टि नाड़ी में पहुंचकर दृष्टि का ज्ञान कराती है और इसमें विकृति आ जाने पर दृष्टि का पूर्ण विनाश हो जाता है जिसे ठीक करना अभी तक असम्भव सा रहा है।

लेकिन कुछ विद्वानों ने दृष्टि को मसूर दाल तुल्य माना है यानि दृष्टि मसूर दाल के समान होती है। मसूर दाल भी Bio Convex Structure का होता है। जिसमें अपारदर्शकता आ जाने पर दृष्टि का नाश हो जाता है।

उपसंहार—इस प्रकार उपस्थित वर्णनों से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन आचार्यों को नेत्र के सूक्ष्म से सूक्ष्म अवयवों की जानकारी का यही आशय है कि उन्होंने उसमें होने वाले रोगों का वर्णन किया है।

इस प्रकार इस निष्कर्ष पर पहुचते हैं कि आयुर्वेद में प्राचीन आचार्यों ने नेत्र शारीर का जो वर्णन किया है वह आधुनिक दृष्टि कोण से काफी वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक प्रतीत होता है।

ISSN 2278-5531 Amrit Sanchar

Importance of Kriyakala in the Prevention of Disease

Dr S. K. Pathak

The general meaning of kriyakala is opportunity/time for treatment. It is derived from two words – kriya+ kala. Kriya means action or treatment & kala means time or opportunity. Therefore kriyakala means time or opportunity for the treatment. When doshas become imbalanced (Either increased or decreased) in the body due to mithyaahar and vihar or pragyaparadh, they create some abnormalities in the body called as "Rogastu Dosha Vaishamyam" in Ayurveda. Some symptoms are also produced by vitiated doshas before the occurrence of diseases which are called purvarupa or pre monitory symptoms. Acharya Sushruta has described the six stages of doshas with symptoms during manifestation of diseases. These stages are Sanchaya, Prakopa, Prasara, Sthansanshraya, Vyaktavastha & Bhedavastha respectively. To obtain the knowledge of any disease, the knowledge of six stages of doshas is very essential. In this context Sushruta has quoted that "the physician who knows about the six stages of doshas is a perfect physician." Knowledge of any disease and its management is impossible without proper knowledge of these six stages of doshas. If proper treatment is given to the patients to control the imbalanced doshas , they can not enter in the other stage, and as a result body is prevented from the attack of disease. Sushruta quoted that "Sanchaye apahrita dosha labhante nottara gatih, tetattrasu gatisu bhavanti balvantarah. (Su. Su .21/36). So these six stages of Doshas are known as kriya kala. Detailed descriptions of each and every stage of Doshas are as given below.

1. **Sanchaya Avastha (stage of accumulation) -** This is the first stage of kriyakala. In this stage doshas are accumulated in their own location thereby creating some clinical signs and symptoms, where they have been accumulated.
   This accumulation of doshas are of two types –
   a) Swabhavik sanchaya. b) Aswabhavik sanchaya.

a) **Swabhavik sanchaya – (Normal accumulation)-** this type of sanchay is according to season, stages of life and prakriti.

According to season -
Vata – in Grishma ritu,
Pitta – in Varsha ritui,
Kapha – in Hemanta ritu.

According to stages of life –
Balya vastha – accumulation of kapha dosha,
Tarun Avastha (Adult) – pitta dosha,
Vridha Avastha (old age)- Vata dosha.

According to prakriti -
Vata prakriti – Vata sanchay,
Pitta prakriti – pitta sanchay,
Kapha prakriti – kapha sanchay.

b) **Aswabhavik sanchaya (abnormal accumulation)-** this is due to mithyaahar , mithya vihara and pragya pradha.

Mithya Ahara :-
Akale chatimatram cha, Asatmyamcha Bhojanam, Mithyaaharam Atiuktam sada chiva vivarjayeta i.e. Untimely and excessive quantity of food, asatmya ahar (harmful diet) is known as mithya ahara.

Mithya Vihara-
Ashaktah kurute shakti manang karoti cha, Mithyavihara mityuktam sada chibva vivarjayeta i.e. Doing excess of work from the capacity and intolerable burden on the head is always prohibited. Pragyaparadha -is the main root cause of all the diseases.

2. **Prakopa Avastha (Stage of aggravated or prolongated doshas) :-**
   This is second stages of kriyakala. This condition arrives when imbalanced doshas are not treated properly. The imbalanced doshas which have previously been accumulated in their own particular sites tend to become excited in this stage. Thus the aggravated doshas produce some signs & symptoms in their own particular sites where they had previously been accumulated.

Types of Dosha Prakopa :-

- **Swabhavika Prakopa (Natural aggravation)-** this is due to seasonal changes in the body.

a) Varsha Ritu ..... Vata Prakopa
b) Sharad Ritu ..... Pitta Prakopa
c) Vasant Ritu ..... Kapha Prakopa

M.D. (Ayu.) Professor & H.O.D., Department of Kriya Sharir,
G.J. Patel, Ayurvedic College & Research Centre, N.V.V. Nagar, Anand (Gujarat)

WORLD JOURNAL OF PHARMACEUTICAL RESEARCH
SJIF Impact Factor 7.523
Volume 6, Issue 13, 710-716. Research Article ISSN 2277– 7105

TRADITIONAL METHOD OF NADI PARIKSHA WITH ITS SIGNIFICANCE

Dr. S. K. Pathak[1] and Dr. Jitender Kumar Rana*[2]

[1]M.D. (Ayurveda), Professor and Head, Department of Sharir Kriya, Principal, Kunwarshekhar Vijendera Ayurveda Medical College and Research Centre, Shobhit University, Gangoh.

[2]M.S (AYURVEDA), Assistant Professor, Department of Rachna Sharir, Kunwarshekhar Vijendera Ayurveda Medical College and Research Centre, Shobhit University, Gangoh.

Article Received on
27 August 2017,
Revised on 18 Sept. 2017,
Accepted on 09 Oct. 2017
DOI: 10.20959/wjpr201713-9850

***Corresponding Author**
Dr. Jitender Kumar Rana
M.S (Ayurveda), Assistant Professor, Department of Rachna Sharir, Kunwarshekhar Vijendera Ayurveda Medical College and Research Centre, Shobhit University, Gangoh.

ABSTRACT

Nadi Pariksha is one of the prevalent and popular method coming from the origin of Ayurveda. In Ashtavidha Roga Pariksha Acharyas have clearly mentioned to first examine the Nadi of the individual which indicates its importance. Really it is a scientific and clinical method of Ayurveda which has been described in Ayurvedic literature. It also indicates the imbalance as well as the balanced condition of the Doshas which is one of the major cause of the disease. Nadi pariksha in these days is still existence but few people know its method of diagnosis. Ayurveda is the ancient science of life where everything mentioned in brief (Sutra Roopa).it is the moral duty of the physician to learn this method and implement in day today practice life. In the present form this method has been collected after the consultation of the various Ayurvedic veteran Acharyas and on the basis of that the detailed description has been described.

KEYWORD: Nadi Pariksha, Ayurveda, Acharya, Roga, Vata, Pita, Kapha.

INTRODUCTION

The pulse diagnosis in Ayurveda is prevalent since thousand of thousands year ago. In ancient time it was the unique method of diagnosis which was used by Ayurvedic Acharya, although there is no detail description in Brahtraya about Nadi pariksha. Acharya Sharangdhara was the first scholar who has described Nadi pariksha in detail. In Ayurveda

Self attested SKPathak

ISSN: 2322 - 0902 (P)
ISSN: 2322 - 0910 (O)

International Journal of Ayurveda and Pharma Research

Review Article

SIGNIFICANCE OF AHARA VIDHI *VISHESH AYATAN* IN THE MANAGEMENT OF NORMAL HEALTH (SPECIAL DIRECTION OF FOOD)

S. K. Pathak[1], Jitender Kumar Rana[2]*

[1]Principal & HOD, Department of Sharir Kriya, *[2]Assistant Professor, Department of Rachna Sharir, Kunwar Shekhar Vijendra Ayurved Medical College & Research Centre, Shobhit University, Gangoh, Saharanpur, Uttar Predesh, India.

ABSTRACT

Ayurveda defines normal health as a balanced state of *Doshas, Dhatus, Agni, mala* and happiness of *Atma, Indriyas* and *Manas* as well as the physical mental and social wellbeing. According to WHO's definition of health "a state of physical mental and social wellbeing and not merely an absence of disease". proper nutrition is very essential for healthy life. *Ahara* (food) is the main source of nutrition. *Ahara* (Food) sustains the life of living beings. All living beings in the universe require *Ahara* (food), complexion, clarity, good voice, longevity, geniusness, happiness, satisfaction, nourishment, strength and intellect are all conditioned by *Ahara* (food). Professional activities leading to happiness in this world, *Vedic rituals* leading to abode in heaven and observance of truth, *Brahmhacharya* leading to salvation are all based on food. Only the individual having a healthy body can afford to perform all activities leading to happiness, heaven and salvation, and for the preservation of health intake of food is essential. Hence food is the basic factor for the attainment of all of them. *Ahara Vidhi Vishesha Ayatan* (Eight types of special directions for ingestion of food). According to *Acharya Charaka* only the normal quantity of *Ahara* cannot provide the good result of *Ahara* because the result of *Ahara* depends upon *Ahara, Vidhi, Vishesh, Ayatan* Eight types of special direction have been given by *Acharya Charaka* for ingestion of food.

KEYWORDS: *Ahara, Vidhi Vishesha Ayatan, Trayo upastambha.*

INTRODUCTION

Ahara has been described in Ayurvedic literature under *Trayo Upastambha* (*Ahara, Nidra & Brahma Charya*). *Ahara* is very essential for nourishment & protection of life. Development of sense organs, mind & body depends upon good qualities of food. Health is Wealth. According to WHO's definition of health is as "a state of physical mental and social wellbeing and not merely an absence of disease."[1] The normal health depends upon the *Ahara. Ahara* plays an important role to provide nutrition to the body. It is mentioned in *Ramayana* that "*Bhuke bhajan na hue gopala*" (*Ramchirtar Manas*).this quotation used by *Sant Kavi Tulsi Das Ji* in *Ramayana* clearly indicates that the hungry man cannot develop himself. *Ahara* provides nutrition to the body but it is more beneficial when a perfect method as described in *Ayurvedic* literature is adopted only quantity of *Ahara* is not beneficial for health but it depends on the *Ahara Vidhi Vishesh Ayatan.* This method clearly indicates that it is clearly mentioned in Ayurvedic literature that only a perfect dose of *Ahara* is not beneficial to maintain perfect health but every man has to be follow some special direction of food which is clearly mentioned in the *Charaka Samhita.* The details about the *Ahara Vidhi Vishesh Ayatan*[2] (special direction of food) are as given below.

1) *Prakriti*
2) *Karana*
3) *Sanyoga*
4) *Rashi*
5) *Desha*
6) *Kala*
7) *Upyoga sanstha*
8) *Upayokta*

1. *Prakriti* [3] (*Swabhav or* Nature)

The natural qualities like *Guru, Laghu* etc. which is present at the time of origin in *Ahara Dravya*. This total qualities of *Ahara* is the *Prakriti* of that particular *Ahara*, for example –*Munga* is *Laghu* from nature and *Unada* is *Guru* from nature. The specific quality of particular food and drug it is known as the *Prakriti* the individual drug, some drugs are cold and some are hot in nature this is the particular quality of the individual drug. Some drugs burn in hot atmosphere and some in cold atmosphere. Some are burning cool atmosphere but their action is hot. Some drugs are burning in hot

INTERNATIONAL
AYURVEDIC
MEDICAL JOURNAL

IAMJ

Review Article ISSN: 2320 5091 Impact Factor: 4.018

ROLE OF OJA IN THE MANAGEMENT OF PERFECT HEALTH W.S.R TO IMMUNITY

S. K. Pathak[1], Jitender Kumar Rana[2]

M.D. (Ayurveda), Professor & Head, Department of Sharir Kriya,
Principal, Om Ayurveda Medical College & Research Centre, Roorkee, Haridwar, Uttrakhand, India
M.S (Ayurveda), Assistant Professor, Department of Rachna Sharir, Kunwar Shekhar Vijendra Ayurved Medical College and Research Centre, Shobhit University, Gangoh, Saharanpur, Uttar Pradesh, India

Email: jitender.rana64@gmail.com

ABSTRACT

Background- *Oja* has been described in *Ayurvedic* literature in *Brihat-trayi* as well as *laghu-trayi*, its importance has been accepted and realized. Basically *Oja* is a hidden material which we cannot see from naked eyes. Although in modern science there is no description but its importance for the survival of the life cannot be ignored. In the eighth month of pregnancy its importance is very remarkable. **Aim And Objectives-** The aim and objectives of this study is to evaluate the role of *Oja* in sense of perfect health. **Material & Methods-** Materials used are *Ayurvedic* text like *Charaka Samhita, Sushruta Samhita, Ashtang Sangraha* and *Ashtang Hridya*.etc. **Discussion-***Oja* as described in the different literature of *Ayurveda* has been discussed in detail, although there is no anatomical existence of *Oja* but physiologically its significance cannot be ignored. *Ayurveda* being a science of life gave the importance to the *Oja* and has described its description, significance in all the *Ayurvedic Samhita*. Basically *Oja* is the essence of all the *Sapta Dhatu* which is very essential for survival of life. **Conclusion-** *Oja*, the essence of all the *Sapta Dhatu* is very essential for prevention of disease as well as survival of healthy life. Its loss in the body is the reason of loss of immunity in the body as a result when the acquired immunity in the body is at loss it may be the cause of death either at once or after a long gap.

Keywords: *Ayurveda, Oja,* immunity, pregnancy

INTRODUCTION

The importance of *Oja* has been described in *Ayurvedic* literature in *Brihat-trayi* as well as *laghu-trayi*, its importance has been accepted and realized. Basically *Oja* is a hidden material which we cannot see from naked eyes. Although in modern science there is nowhere any description but its importance for the survival of the life cannot be ignored. In the eight month of pregnancy its importance is very remarkable. In *Ayurveda*, the significance of *Oja* has been accepted but in modern science there is nothing any description regarding *Oja*. On the basis of clinical science and symptom *Oja* has been described in *Ayurvedic literature* in detail. Basically some person compares the *Oja* is different material and another also compares with another material. In brief we may say that there is a great confusion about *Oja* in differ-

Self attested
SK Pathak

WORLD JOURNAL OF PHARMACEUTICAL RESEARCH
SJIF Impact Factor 8.074
Volume 7, Issue 9, 1895-1901. Review Article ISSN 2277– 7105

ROLE OF MANA IN THE SENSE OF HEALTH-A REVIEW

Dr. S. K. Pathak[1] and Dr. Jitender Kumar Rana*[2]

[1]M.D. (Ayurveda), Professor and Head, Department of Sharir Kriya, Principal, Kunwar Shekhar Vijendra Ayurved Medical College and Research Centre, Shobhit University, Gangoh.

[2]M.S (Ayurveda), Assistant Professor, Department of Rachna Sharir, Kunwar Shekhar Vijendra Ayurved Medical College and Research Centre, Shobhit University, Gangoh.

Article Received on 21 March 2018,
Revised on 11 April 2018,
Accepted on 02 May 2018
DOI: 10.20959/wjpr20189-12263

***Corresponding Author**
Dr. Jitender Kumar Rana
M.S (Ayurveda), Assistant Professor, Department of Rachna Sharir, Kunwar Shekhar Vijendra Ayurveda Medical College and Research Centre, Shobhit University, Gangoh.
jitender.rana64@gmail.com

ABSTRACT

Background: There is great importance of Mana in human life. It is one of the connections of the source of knowledge because the knowledge cannot achieve without the connection of Mana with their sense organ and sense organ with their objects. In the description of Tridand, (Satva, Atma & Sharir) Mana is one of the triangles as described in Ayurvedic literature. The person cannot gain the perfect knowledge unless his mind is not healthy. There is nothing any confusion among Ayurvedic Acharyas about the location of Mana. All the Ayurvedic Acharyas have directly or indirectly accepted that the location of Mana is Hridya (heart) and it is one of the essential elements for the intelligence. A person will always be in the dark if his mind is not fully developed, for example- a person suffering from Unmad (mental illness) cannot develop his life perfectly, similarly a person whose mind is sharp can concentrate on every minute objects. **Aims & Objective:** The aim of this study the role of Mana in sense of normal health. The objectives of this study to evaluate role of Mana in sense of normal health. **Material and Method:** Materials used are Ayurvedic text like Charaka Samhita, Sushruta Samhita, Ashtang Sangraha and Ashtang Hridya. **Discussion:** All through the location of Mana is cranial cavity which situated in the brain and it is clearly mentioned when Mana is vitiated due to Mithya Ahara Vihara it can also affect on mind as well as body. On the same pattern the Vata pita Kapha is vitiated it also produces the disease in the body and ultimately when body is vitiated it is also effect on the mind. When the mind is affected by vitiated Doshas it

Self attested

रण सिटी www.jagran.com

ानकारी दी

ोजित कैंप में किसानों को
जागरण

लिए बीजों की गुणवत्ता से
ना चाहिए। इस अवसर पर
ओर से डा. जोगिंद्र सिंह ने
खाद के बारे में किसानों को
निल यादव, सुरेंद्र कुमार व
संबोधित किया। मेले के
इनाम भी निकाले गए।

शिविर में किया 250 मरीजों का निशुल्क चेकअप

संवाद सूत्र, मोगा : यूनियन बैंक आफ इंडिया मोगा के सहयोग से सत्य साई मुरलीधर आयुर्वेदिक कालेज व अस्पताल मोगा द्वारा गांव तलवंडी भंगेरिया में गदरी बाबा चूहड़ सिंह के शहीदी दिवस के अवसर पर मुफ्त चिकित्सा शिविर का आयोजन गत दिवस किया गया। इस शिविर में लगभग 250 मरीजों का निशुल्क चेकअप किया व दवाईयां वितरित की गई। मरीजों में बच्चों, बुजुर्गों व महिलाओं की संख्या सर्वाधिक रही। गठिया, दमा, चर्म रोग, उदर रोग व महिलाओं की गंभीर समस्याओं का निराकरण किया गया। मरीजों को बदलते हुए मौसम में होने वाली बीमारियों के प्रति जागरूक किया गया और उन्हें उनकी सेहत सुधारने के लिए अन्य व्यवहारिक परामर्श दिया गया।

इस शिविर का उद्घाटन यूनियन बैंक आफ इंडिया के शाखा मैनेजर एसके कुकरेजा ने किया। उदघाटन में समाज सेवक भूतपूर्व सैनिक मेहर सिंह ने कार्यकर्ताओं के कार्य की सराहना की, जबकि अस्पताल व बैंक वालों का आभार प्रकट किया।

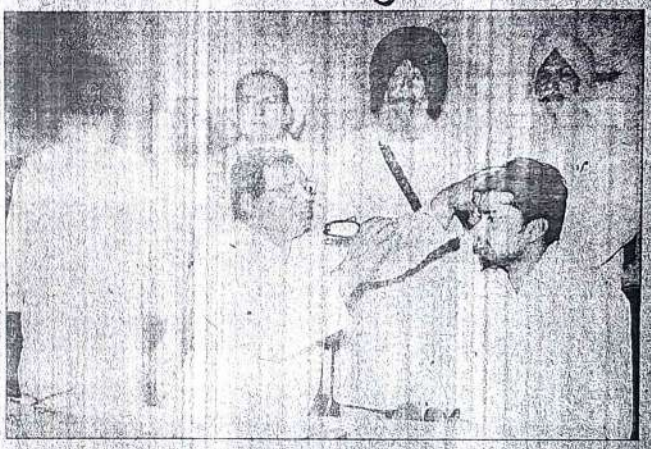

मोगा के नजदीकी गांव तलवंडी भंगेरिया सत्य साई आयुर्वेदिक कालेज में लगाए गए निशुल्क मेडिकल कैंप में जांच करते हुए माहिर डाक्टर। जागरण

इस अवसर पर कैंप में डा. श्रीश मिश्रा, डा. एसके पाठक, डा. अनुराधा, डा. प्रोमिला आर्य ने अपनी विशिष्ट सेवाएं प्रदान की। कालेज के प्रधानाचार्य डा. एसपी तिवारी व प्रशासक कर्नल टीआर पंडोह ने कैंप में उपस्थित होकर कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन किया।

• मोगा •

अमर उजाला

कैंप में पांच सौ मरीजों का इलाज किया गया

महायता

- **रेडक्रास और एसएसएमडी के सहयोग से लगाया कैंप**
- **मौके पर ही मरीजों को दवाएं भी वितरित की गईं**

मोगा। रेडक्रास की ओर से श्री सत्य साई मुरलीधर आयुर्वेदिक मेडिकल कालेज और अस्पताल की ओर से चलाए जा रहे अभियान के तहत निहालसिंह वाला में मेडीकल चेकअप एवं महिला जागरूकता कैंप लगाया गया। कैंप में 500 मरीजों का इलाज किया गया और जरूरतमंद लोगों को मौके पर ही दवाएं दी। कैंप में मेडिकल कालेज के प्रिंसिपल डा.एसपी तिवारी ने मौके पर पहुंचकर कैंप में शामिल स्टाफ को प्रोत्साहित किया।

शिविर का उद्घाटन एसडीएम की अर्धांगिनी ने फीता काटकर उद्घाटन किया। उद्घाटन के मौके पर पंचायत समिति के सचिव भाई स्वर्ण सिंह मौजूद थे। शिविर में आने वाली में बच्चों और महिलाओं की संख्या काफी ज्यादा रही। कालेज के प्रशासक कर्नल टी.आर.पांडो ने बताया कि सत्य साई मुरलीधर आयुर्वेदिक मेडिकल कालेज में गरीब महिलाओं को डिलीवरी मुफ्त की जाती है साथ ही बेटी को जन्म देने वाली मां को 300 रुपये और बेटे को जन्म देने वाली मां को 100 रुपये उपहार स्वरूप भी दिया जाता है।

साथ ही अस्पताल में बवासीर और भगंदर आदि रोगों का इलाज बिना चीर फाड़ के किया जाता है। शिविर में डा.चंद्रशेखर शर्मा, डा.श्रीश मिश्रा, डा.एसके पाठक, डा.अनुराधा, डा.प्रमिला आर्य मौजूद थे।

जांच : मोगा में बुधवार को निहालसिंह वाला में रेडक्रास और श्री सत्यसाई मुरलीधर आयुर्वेदिक मेडिकल कालेज की ओर से लगाए गए शिविर में इलाज करते हुए डा.एसक पाठक। इस मौके पर मौजूद अन्य लोग। फोटो : अमर उजाला

...डालेगा। उन्होंने कहा

रंजना बाला का कहना है
अधिकार मिलने की कोई
लने का कोई फायदा नहीं,
कते हैं। गौरव, अमनदीप,
ना है कि कांग्रेस व बादल
खते हुए उन्हें 10 वर्ष हो
रा दल आना चाहिए। जो
को विकास के पथ पर

कि देश के नौजवानों को सरकार खुद ही नशे करने के लिए उकसा रही है, क्योंकि नौकरियां नहीं मिल रही व सरकार कोई उद्योग लगाने के लिए प्रयासरत भी नहीं है। मध्यवर्गीय परिवार के नौजवानों का कहना है कि कोई भी सरकार देश की गंभीर समस्याओं जैसे बेरोजगारी, गरीबी, भ्रष्टाचार व महंगाई आदि के प्रति ध्यान नहीं दे रही।

...ाना बच्चों की आंखों के निरीक्षण के लिए लगाया कैंप

र
मोगा :
गुरु
की
न में
र्गों से
रहे
लिए
क व
शन
किया।
की

सिंह,
इंदर
रबंस
रजीत
रमीत
जीत
सिंह
थे।

मोगा के दीप मॉडल स्कूल में लगाए गए आंखों के फ्री चेकअप कैंप में बच्चे को देखते हुए डाक्टर। जागरण

हमारे प्रतिनिधि, मोगा : चौक शेखां में स्थित दीप पब्लिक मॉडल स्कूल में बुधवार को स्कूल के सभी बच्चों की आंखों का निरीक्षण कैंप लगाया गया। कैंप में आंखों के माहिर डा. एसके पाठक ने बच्चों की आंखों को चेकअप किया ... आंखों में होने वाली बीमारियों से बचाव के ...

नेत्र शिविर में 200 लोगों की जांच

चेयरमैन के जन्मदिवस पर हुआ शिविर का आयोजन

गंगोह (ब्यूरो)। शोभित विश्वविद्यालय के चेयरमैन डॉ. शोभित कुमार के जन्मदिवस एवं विवि दिवस के अवसर पर कुंवर शेखर विजेंद्र आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज एंड रिसर्च सेंटर में नेत्र जांच शिविर और शोध प्रस्तुतिकरण का आयोजन किया गया।

शोभित विवि में नेत्र रोगियों की जांच करते चिकित्सक।

कुलपति डा. दुर्ग विजय राय ने इसका शुभारंभ किया। नेत्र शिविर में विशेषज्ञों ने 200 लोगों की आंखों की जांच की। 100 को चश्मे प्रदान किए। संचालन डॉ. लवलीन कोर ने किया। रजिस्ट्रार डॉ. महिपाल सिंह, डॉ. बिजयेश हालदार, डॉ. कंवलजीत सिंह आहुजा, डॉ. एसके पाठक, डॉ. आरिफ़ नसिर, डॉ. अतुल गुप्ता, बिजेंदर कुमार मौर्य आदि रहे।

स्काउट एंड गाइड सम्मानित

नानौता। लॉर्ड कृष्णा पब्लिक स्कूल में आयोजित तीन दिवसीय स्काउट एंड गाइड शिविर का समापन हो गया। शिविर में ग्रुप एक व ग्रुप दो का प्रदर्शन श्रेष्ठ रहा। ग्रुप दस ने कमांडो ब्रिज का निर्माण किया। मुख्य प्रेरक जिला संगठन आयुक्त नीरज पाटिल, शामली और मुजफ्फरनगर के जिला संगठन आयुक्त विवेक बोकाडिया ने आपात काल में टेंट बनाने, जंगल मार्च, दिशाओं का ज्ञान, मीनार बनाने, प्राथमिक चिकित्सा, खोज के चिन्ह, बिना बर्तन के खाना बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। प्रथम, द्वितीय और तृतीय रहे स्काउट एंड गाइड को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। प्रधानाचार्य सुनील कुमार, प्रबंधक सुशील कुमार राणा, अशोक कुमार, रामकुमार, जल सिंह, विपिन कुमार, अजीत सिंह, संदीप आदि रहे।

तलाश गु

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेर
से कहीं चला गया है। जिसकी उम्र 25 वर्ष
मोटी, चेहरे पर हल्की दाढ़ी, आसमानी चैक

है। जो जबान से बोल नहीं
5000 रुपये (पांच हजार

नाम- शाकिर पु
ग्राम- मीरापुर म
थाना- अफजल
तहसील- धामपु

Veer Bahadur Singh Purvanchal University
Jaunpur (U.P.)

No.V.B.S.P.U./Admin./02/2015/ Date: 24.07.2015

पश्चिमांचल विद्यु

निविदा सूचना 04/2015-2016 (आपूर्ति

निशुल्क शिविर में हुई 590 मरीजों की जांच

गंगोह, 22 मार्च (रमेश): शोभित विश्वविद्यालय के कुंवर शेखर विजेंद्र आयुर्वेद मैडिकल कॉलेज एवं रिसर्च सैंटर द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार के निर्देशों के अनुपालन में गांव बीनपुर में चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 590 मरीजों की जांच व चिकित्सा की गई।

शिविर का उदघाट्न विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. डी.के. कौशिक ने दीप जलाकर किया। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद द्वारा सभी रोगों का इलाज संभव है और योगाभ्यास से शरीर को सही रखा जा सकता है। कुलपति प्रो. डॉ. डी.वी. राय ने कहा कि शोभित विश्वविद्यालय भविष्य मे भी नि:शुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित करता रहेगा और समाज को स्वस्थ रखने मे अपनी भूमिका निभाएगा। कुलसचिव डॉ. महीपाल सिंह एवं ए.वी.आई.पी.एस. के निदेशक डॉ. रंजीत सिंह ने भी विचार व्यक्त किए। इसके उपरांत विशेषज्ञ चिकित्सकों, डॉ. एस.के. पाठक, डॉ. प्रदीप जे.एम., डॉ. जितेंद्र कुमार राणा, डॉ. एस.डी. पांडेय एवं डॉ. राधिका शर्मा द्वारा 590 मरीजों में जोड़ों के दर्द, ब्लड प्रैशर, शुगर, श्वास, चरम रोग,

गांव बीनपुर में आयोजित शिविर में मरीजों की जांच करते चिकित्सक। (रमेश)

शिरो रोग, बवासीर, भगंदर एवं स्त्रियों के गुप्त रोगों की जांच की गई।

शिविर में नेत्र से संबंधित बीमारियों का भी इलाज किया गया और नि:शुल्क दवाई एवं चश्में प्रदान किए गए। अंतिम वर्ष के छात्र एवं छात्राओं ने भी बढ़-चढ़कर सहभागिता कर योग किया। डा. अनंग पाल सिंह, चौधरी पप्पू प्रधान, रोहित चौधरी, चौधरी बलहारी, चौधरी राजीव प्रधान, प्रविंद्र कुमार एवं सतीश कुमार का सहयोग रहा।

नि:शुल्क शिविर में हुई 590 मरीजों की जांच। (रमेश)

0 इश्क सुभान 0.30 कलीरें, क सुभान अल्लाह, मृत, 21.00 आ जाने से

कलर्स : 08.00 दिल से दिल तक, 08.58 इश्क में मरजावां, 11.00 उड़ान, 11.30 दिल से दिल तक, 13.00 बेपनाह, 18.00 कसम, 18.30 सावित्री देवी कालेज एंड हॉस्पिटल, 19.00 तू आशिकी, 21.30 लाडो वीरपुर की मर्दानी, 22.30 बेलन वाली बहू

स्टार गोल्ड : 07.50 चांदनी चौक टू चाइना, 11.10 कुंवारा, 13.45 काबिल, 16.50 सिघम 19.55 शोले

सैट मैक्स : 07.04 रब ने बना दी जोड़ी, 10.50 शिवाजी-द बॉस, 13.48 हीरोपंती, 16.57 खतरनाक खिलाड़ी, 19.55 द रियल लीडर ब्रह्मा, 22.48 डेंजरस खिलाड़ी

जी सिनेमा : 08.58 हिन्दुस्तानी योद्धा, 11.44 पुलिस और टाइगर, 13.59 जिगरवाला नं-1, 17.11 लिंगा, 20.00 ब्रूस ली-द फाइटर, 22.45 इवा-द टाइगर

सत्यमेव जयते

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

(उच्चतर शिक्षा विभाग)

रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110066

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/सुश्री/डॉ० S.K. PATHAK

ने वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा G.J. Patel Ayurveda College & Research Centre में दिनांक 13/03/10 से 15/03/10 तक

आयोजित Terminology Seminar on Arishta Vijnaniyam विषय के कार्यक्रम में भाग लिया।

दिनांक : 15/03/10

के० बि० कुमार

कार्यशाला प्रभारी

Principal
Govindbhai Jorabhai Patel Ayurvedic Colle
New Vallabh Vidyanagar-388121
Ta. & Dist. Anand, Guiarat

प्रो० के० बिजय कुमार
अध्यक्ष

GOVT. AYURVEDIC COLLEGE, PATIALA (PUNJAB)

सर्वे सन्तु निरामयाः
GOVT. AYURVEDIC COLLEGE PUNJAB PATIALA

CERTIFICATE

RE-ORIENTATION TRAINING PROGRAMME (ROTP)

in Ras Shastra & Bhaishajya Kalpana (Pharmacology)

5TH NOV., 2003 - 4TH DEC., 2003

(Sponsored by Department of ISM & H, Ministry of Health & Family Welfare, Govt. of India)

This is to certify that Dr. Shailesh Kumar Pathak *of* SSMD Ayurveda College, Moga *participated/~~attended~~ the One Month Re-Orientation Training Programme held in Govt. Ayurvedic College,, Patiala from 5th of November 2003 to 4th of December 2003, and delivered* 2 *lecture(~~s~~) on* 28th of Nov. 2003

Adarsh Kumar
Co-ordinator
Re-orientation Training Programme

Principal & Convener
Re-Orientation Training Programme

भिषजां साधुवृत्तानां भद्रं आगमशालिनाम् । अभ्यस्त कर्मणां नित्यं भद्रं भद्राभिलाषिनाम् ॥
Ayurveda Maharunayatra 2011
Sadgrantho No Mahotsava, 16 To 18 th Of December 2011.
Certificate Of Appreciation
This Certificate Of Appreciation is Awarded To
Dr.
For His / Her Active Participation In
Ayurveda Maharunyatra & Seminar On 16th, 17th & 18th Of December 2011
Organized by Active Ayurvedist Organization (AAO) International Trust
as a Deligate Speaker / Guest.
CHAIRMAN
ACTIVE AYURVEDIST ORGANIZATION
INTERNATIONAL TRUST,
AHMEDABAD
CHAIRMAN
SHREE SWAMINARAYAN GURUKUL
VISHWAVIDYA PRATISHTHANAM,
CHHARODI, AHMEDABAD

Shobhit University

EDUCATION EMPOWERS

2nd International Conference

On

AGEING : CLASSICAL TO ADVANCED APPROACH

November 28-29, 2015

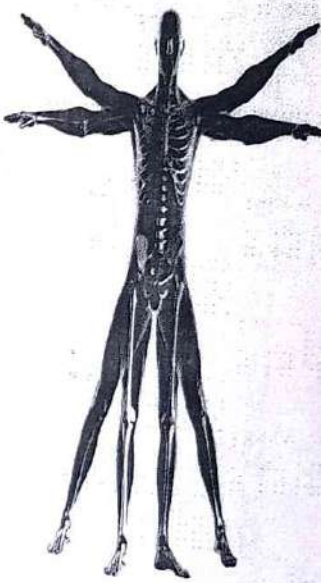

ayurveda

AGEING-2015

ORGANIZED BY

Shobhit University

Certificate

This is to certify that PROF.(DR). SHAILESH KUMAR PATHAK from K.S.Y.A.M.C&R.C. GANGOH, SAHARANPUR has attended the 2nd International Conference on Ageing: Classical to Advance Approach having theme "Innovative Ageing with Developments in Bio-Engineering, Technological and Traditional Health Care", organized by Shobhit University during November 28-29, 2015. He/She has also delivered the plenary lecture/invited talk/oral presentation entitled ROLE OF AYURVEDA IN THE MANAGEMENT OF AGE RELATED CHANGES IN THE EYE & IT'S EFFECT ON ACCOMODATION

Convener

Chairperson

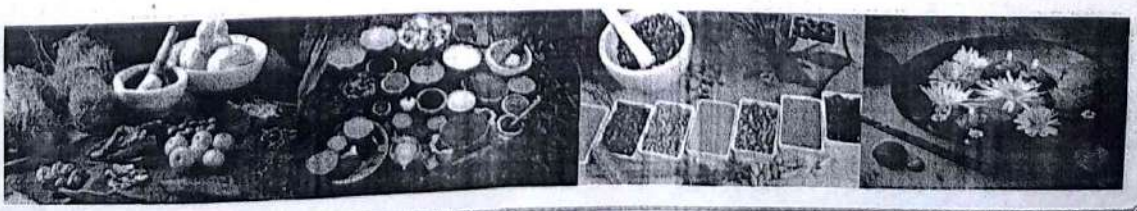

Shobhit University

EDUCATION EMPOWERS

Our Inspirer
Babu Vijendra Kumar Ji

National Conference on "New Challenges in Pharmaceutical Education & Research"

19th March 2016

Certified that Prof./Dr./Mr./Mrs./Ms. S.K. Pathak has participated as an Invited Speaker/Chaired a Scientific Session/Resource Person/Delegate in National Conference on "New Challenges in Pharmaceutical Education and Research" held at Adarsh Vijendra Institute of Pharmaceutical Sciences, Shobhit University, Gangoh on March 19, 2016

Prof. (Dr.) A. K. Gupta
Convenor

Dr. Mahipal Singh
Registrar

SEMINAR & WORKSHOP ON

INDIAN SYSTEM OF MEDICINE & THE THERAPEUTIC USES OF AYURVEDIC MEDICINAL PLANTS

on 24-25th November, 2001

at

L.R. D.A.V. COLLEGE, JAGRAON (Ludhiana)

Organised by

Society for Sevice to Voluntary Agencies (SOSVA) Chandigarh

&

International Council of Ayurveda, Punjab Chapter

N.I.M.A. Jagroan

This is Certify that

Dr./Prof./Ms./Mr. Shailash Pathak

of S S M D Ayurvedic College, MOGA

attended/partjcapted in the Workship/Seminar on 24 & 25th Nov., 2001 and took part in the Scientific proceedings.

Accreditation 14 Credit hours of Physicians of Ayurveda Recognition award as designated by the organization.

Director Sosva Chandigarh	President	Gen. Secretary	Director Central Research Institute of Ayurveda Patiala Guest of Honour

JAIKRISHNADAS AYURVEDA SERIES
No. 317

Basic Concept of Ayurvedic Physiology with Modern Views

(Sharira Kriya Vijnana)

According to the latest syllabus of CCIM, New Delhi

Dr. Shailesh Kumar Pathak
M.D. (Ayu.) L.U.

Vol.–I

CHAUKHAMBHA ORIENTALIA
A House of Oriental, Antiquarian and Ayurvedic Books
VARANASI

List of publication

By Dr. S.K. Pathak
professor dept of Kriya sharir

1. Ayurveda me Netra sharir Eka Adhyayan
by Sachitra Ayurveda 1990 (patna)

2. Importance of Kriya Kala in prevention of Diseases.
by Amrita sanchar ISSN – 2278-5531
BKAMCH'S

3. Traditional Method of Nadi pariksha with its significance
by world Journal of pharmaceutical Research. ISSN 2277-7105

4. Role of Mana in the sense of health – A Review
by world Journal of pharmaceutical Research. ISSN 2277-7105

5. Significance of Aharvidhi vishesh Ayatan in the management of Normal health. (special direction of food)
by International Journal of Ayurveda and Research Pharma ISSN 2322-0902

6. Role of oja in the Management of perfect health w.s.r to Immunity.
by International Ayurvedic Journal.
ISSN 2320 5091

Book publication :-

① Basic Concept of Ayurvedic physiology with Modern view.

by chaukhambha orientalia varanshi 2016.

② A practical guide of Kriya sharir with scientic approach

by chaukhambha orientalia delehi 2024.

Dr. S.K. Pathak
Professor
dept of Kriya Sharir
H.A.M.C.H Chiksi